SANATANODAYA सनातनोदय
ISSN (O) : 3048-9318
Vol. 1, No. 1, Year 2024
Available Online : https://sanatanodaya.com/

भगवद्गीता का पुनर्जन्म सिद्धान्त : एक विमर्श

वीरेन्द्र कुमार
शोध छात्र, दर्शनशास्त्र विभाग, दी0 द0 उ0 गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश
Email : virsatyam@gmail.com

सारांश :–

भगवद्गीता जो है वह सनातन धर्म की सर्वोतम कृति है। गीता को उपनिषद् का नवनीत कहा जाता है। किसी भी ग्रन्थ का मानव के मन पर कितना अधिकार है, इसे उस ग्रन्थ के महत्व की कसौटी समझा जाये तो कहना होगा कि भगवद्गीता भारतीय दार्शनिक विचारधारा में सबसे अधिक ही प्रभावशाली एवं महत्वपूर्ण ग्रंथ है। इसमें भगवद्गीता में प्रतिपादित विचारधारा सनातन धर्म ही नहीं अपितु सम्पूर्ण मनुष्य जाति के हृदय पटल पर एक अमिट छाप छोड़ते हैं। पुनर्जन्म का सिद्धान्त भी इसके सर्वोत्तम विचारों में से एक है।

''ब्राह्मांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृहत्यति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संभाति नवानि देही।।''[1]

अर्थात– जिस प्रकार मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्यागकर नया वस्त्र धारण करता है ठीक उसी प्रकार आत्मा पुराने (जीर्ण) शरीर को त्याग कर नया शरीर धारण करता है। ''पुनः आत्मा को अजर, अमर, शाश्वत, नित्य, अखण्ड एवं अपरिणामी कहा गया है।''[2]

मूल शब्द :– भगवद्गीता, पुनर्जन्म, सर्वोत्तम, महत्वपूर्ण, मनुष्य, पुनः, शरीर, आत्मा, जन्म, मरण।

प्रस्तावना :– भगवद्गीता सनातन धर्म की सबसे महत्वपूर्ण एवं सर्वोत्तम धार्मिक ग्रंथों में से एक है तथा इस ग्रंथ को आसानी से सबसे अच्छी तरह से समझा एवं जाना जाता है। महर्षि वेदव्यास द्वारा रचित श्रीमद्भगवद् गीता स्वयं भगवान श्री कृष्ण द्वारा कथित होने के कारण इसके वक्ता स्वयं भगवान एवं श्रोता के रूप में अर्जुन है। भगवद्गीता एक ऐसी ग्रंथ है जिसके 700 श्लोकों में सम्पूर्ण वेदों का सार निहित है। इस ग्रंथ में अनेकों सिद्धान्तों का वर्णन है जिसमें पुनर्जन्म की भी चर्चा की गयी है। जगत् के

ISSN (O) : 3048-9318
Vol. 1, No. 1, Year 2024
Available Online : https://sanatanodaya.com/

प्राचीन धर्मों की तरह सनातन धर्म मृत्यु के उपरान्त जीवात्मा के पुनर्जन्म में विश्वास रखता है। पुनर्जन्म का अर्थ होता है पुनः पुनः जन्म ग्रहण करना। अर्थात सनातन धर्म के अनुसार पुनर्जन्म जगत् में जन्म एवं मृत्यु की श्रृंखला है। सनातन धर्म के अध्यात्मवाद का प्रतीक के रूप में पुनर्जन्म में विश्वास करना है।

पुनर्जन्म का जो विचार है वह कर्मवाद के सिद्धान्त एवं आत्मा की अमरता से ही उदित या उत्पति होता है। एक ही जीवन में आत्मा अपने कर्मों का फल प्राप्त नहीं कर सकती है। आत्मा को कर्मों का फल भोगने के लिए जन्म ग्रहण करना अति आवश्यक हो जाता है। आत्मा की अमरता से ही पुनर्जन्म का सिद्धान्त उत्पन्न होता है। नित्य एवं अविनाशी होने के कारण आत्मा एक शरीर से दूसरे शरीर में शरीर की मृत्यु के पाश्चात् प्रवेश करती है। मृत्यु का अर्थ शरीर का अन्त है आत्मा का नहीं। इस प्रकार शरीर के अन्त के बाद ही आत्मा का दूसरा शरीर धारण करना ही पुनर्जन्म है।

भगवद्गीता जो है वह सनातन धर्म में सर्वोच्य एवं महत्वपूर्ण आधार के रूप में माना जाता है। पुनर्जन्म सिद्धान्त की व्याख्या गीता में बहुत ही सुन्दर एवं सुव्यवस्थित रूप में की गयी है। ''जिस प्रकार मानव की आत्मा भिन्न–भिन्न अवस्थाओं से– जैसे शैशावस्था, युवावस्था, वृद्धावस्था से गुजरती है उसी प्रकार वह एक शरीर से दूसरे शरीर में प्रवेश करती है।''[3] ''जिस प्रकार मनुष्य पुराने वस्त्रों के जीर्ण हो जाने पर नवीन शरीर धारण करती है।''[4] भगवद्गीता में बतलाया गया है कि मानव की तरह ईश्वर का भी पुनर्जन्म होता है, जिसे हम ईश्वर का अवतारवाद कहते हैं। अपने पूर्व जन्म की अवस्था से मनुष्य अनभिज्ञ रहता है जबकि ईश्वर (परमात्मा) सारी चीजों को जानता रहता है। मनुष्य का पुनर्जन्म जो होता है वह कर्मयोग पर ही आधारित होता है। इसीलिए भगवद्गीता में कहा भी गया है– ''योगः कर्मसु कौशलम्।''[5] अर्थात कुशलता पूर्वक कर्म सम्पादित करना योग है। मतलब कहने का अर्थ यह है कि मनुष्य जो है वह अपने कर्म को कुशलता पूर्वक नैतिक कर्म जो करेगा वही कर्मयोग उसको जन्म–मरण की श्रृंखला अर्थात पुनर्जन्म के मुक्त हो सकता है। भगवद्गीता में भिन्न–भिन्न प्रकार के स्थूल शरीरों को माना गया है। जिनसे मोक्ष की प्राप्ति के लिए आत्मा को विचरण करना पड़ता है। वे हैं–

1. उद्भिज्ज : जीवात्मा को इस रूप में वृक्ष एवं लता के रूप में विचरण करना पड़ता है।
2. स्वेदज : जीवात्मा को इस रूप में कीट–मकौड़ा, मच्छर के रूप में विचरण करना पड़ता है।
3. अण्डज : जीवात्मा को इस रूप में पक्षियों के रूप में विचरण करना पड़ता है।
4. जरायुज : जीवात्मा को इस रूप में पशुओं एवं मनुष्यों के रूप में विचरण करना पड़ता है।

भगवद्गीता उपर्युक्त इन चार प्रकार के स्थूल शरीरों के अलावा भी सनातन धर्म में सूक्ष्म शरीर की व्याख्या की गयी है। स्थूल शरीर के नष्ट होने के बाद ही सूक्ष्म शरीर दूसरे शरीर में प्रवेश करता है। बौद्ध धर्म या दर्शन में भी पुनर्जन्म की व्याख्या हुई है। बौद्ध दर्शन भी पुनर्जन्म को प्रमाणिक मानता है। पुनर्जन्म की व्याख्या गौतम बुद्ध ने नित्य आत्मा के बिना की है। उन्होंने ने कहा कि जिस प्रकार एक दीपक की ज्योति से दूसरे दीपक की ज्योति को प्रकाशित किया जाता है, ठीक उसी प्रकार वर्तमान जीवन की अन्तिम अवस्था से ही भविष्य जीवन की प्रथम अवस्था का निर्माण होता है। इसलिए इसी व्याख्या के आधार पर हम कह सकते हैं कि सनातन धर्म की तरह ही बौद्ध धर्म या दर्शन में भी पुनर्जन्म की व्याख्या की गई है।

पुनर्जन्म सिद्धान्त के विचार को नहीं मानने वाले विचारक इसकी आलोचना भी किए हैं। पुनर्जन्म के विचार पर आलोचकों ने कहा है कि पुनर्जन्म का सिद्धान्त एक भ्रान्तिमूलक है, क्योंकि मनुष्य अपने पूर्व जन्म की अनुभूतियों को स्मरण नहीं करता है। यह आलोचना निराधार कही जा सकती है। वर्तमान जीवन में हम बहुत सी घटनाओं का स्मरण नहीं कर पाते। लेकिन इससे यह निष्कर्ष निकालता है कि उन घटनाओं का अस्तित्व नहीं है, सर्वथा यह गलत होगा।

पुनर्जन्म के सिद्धान्त के विरूद्ध यह भी आलोचना की जाती है कि पुनर्जन्म का जो सिद्धान्त है वह वंश परम्परा का विरोध करता है। वंशपरम्परा सिद्धान्त के अनुसार मनुष्य का मन तथा शरीर अपने माता–पिता के अनुरूप ही निर्मित होता है। इस प्रकार यह वंशवाद परम्परा जो सिद्धान्त है वह मनुष्यों को पूर्व जन्म के कार्यों का फल न

ISSN (O) : 3048-9318
Vol. 1, No. 1, Year 2024
Available Online : https://sanatanodaya.com/

मानकर अपनी वंश परम्परा द्वारा ही प्राप्त होता है। मनुष्य के निर्माण की व्याख्या यदि उनके वंश परम्परा सिद्धान्त के द्वारा किया जाये, तो फिर मनुष्य के बहुत से उनके गुणों की, जो उसके पूर्वजों में नहीं पाए गए थे, व्याख्या करना बहुत ही कठिन हो जायेगा।

पुनर्जन्म सिद्धान्त के विरूद्ध एक और आलोचना यह कह कर की जाती है कि पुनर्जन्म सिद्धान्त जो है वह मनुष्य को परलोक जगत के प्रति बहुत ज्यादा चिन्तनशील बना देता है। मानव को दूसरे जन्म के प्रति अनुराग रखना पुनर्जन्म की सिद्धान्त नहीं सिखाता है। ठीक इसके विपरीत मानव यह जानकर कि हमारा भविष्यत जीवन वर्तमान जीवन के कर्मों का फल होगा इसी जगत के कर्मों के प्रति मानव पूर्णरूपेण आसक्त हो जाता है।

निष्कर्ष :–

इस प्रकार उपर्युक्त व्याख्या के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि भगवद्गीता जो है वह एक योगशास्त्र है और इसके सभी अध्यायों में योग की ही व्याख्या की गई है। गीता में बताए गए योग के योगमार्गों के माध्यम से ही मनुष्य अपने को जन्म–मरण की श्रृंखला अर्थात पुनर्जन्म से छुटकारा पाकर परम लक्ष्य अर्थात मोक्ष की प्राप्ति करके ही जीवात्मा परमात्मा में समाहित हो सकता है।

सन्दर्भ सूची :

1. गीता 2/22
2. गीता 2/20
3. गीता 2/14
4. गीता 2/12
5. गीता 2/50